Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वै. १४

सुधानिधि ग्रन्थावली ३३

प्राणिज औषधि

मूल लेखक
स्व० आयुर्वेदमहोपाध्याय
पं० शंकरदाजी शास्त्रीपदे

सम्पादक
जगन्नाथप्रसाद शुक्ल वैद्य

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुधानिधि ग्रन्थावली ३३

प्राणिज औषधि

जिसमें
प्राणियोंके अङ्गप्रत्यङ्ग तथा उनसे उत्पन्न
होनेवाली वस्तुओंका औषधिप्रयोग
रोगानुसार दिया गया है।

मूल लेखक
स्व० आयुर्वेदमहोपाध्याय
पं० शंकरदाजी शास्त्रीपदे

अनुवादक और परिवर्धक
आयुर्वेद पंचानन
जगन्नाथप्रसाद शुक्ल राजवैद्य भिषङ्मणि

द्वितीय बार १००० सं० २००५ मूल्य ।)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२१—मक्खन १९
२२—घी १९
२३...बाघकी चर्बी २१
२४—मूत्र २१
२५—मही २३
२६—शहद २३
२७—मोम २४
२८—समुद्र फेन २५
२९—सर्पकी कांचली २६
३०—खरहेका रक्त २६
३१—सांबर शृंग २६
३२—हरिण शृङ्ग भस्म २७
३३—हस्तिदंत २७

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्री धन्वन्तरयेनमः

प्राणिज औषधि

चिकित्सा करनेवालोंको चिकित्सा-कर्ममें केवल जड़ी बूटी द्वारा ही चिकित्सा नहीं करनी पड़ती, बल्कि अनेक बार ऐसी औषधियोंसे भी काम लेना पड़ता है, जिसमें पशु पक्षी आदि प्राणियोंके अवयवोंकी आवश्यकता हुआ करती है। जैसे मान्त्रिक-तान्त्रिक उल्लू आदिकी हड्डीकी सदा खोजमें रहते हैं, उसी तरह कभी कभी वैद्योंको भी कुत्तेकी जीभ आदिके लिये प्रयत्न करना पड़ता है। पश्चिमी चिकित्साशास्त्रमें ऐसी औषधियोंकी बहुत अधिक प्रधानता रहती है; परन्तु अपने यहां भी प्रसंगानुसार इनका उपयोग होता है, और उनसे महत्वपूर्ण लाभ भी होता ही है। प्रत्येक वैद्य और वैद्यकके विद्यार्थीको इस विषयकी भी जानकारी होना आवश्यक हैं। अतएव इस विषय-का प्रयत्न करना हमने आवश्यक समझा। स्वर्गवासी आयुर्वेद-महोपाध्याय पं० शङ्करदाजी शास्त्रीपदे महोदयने एक निबन्धमें यह संग्रह कर दिखाया था कि कौन कौनसे जानवरके कौन कौनसे अंग किस किन रोगोंमें काम आते हैं। और चिकित्सा व्यवसायमें कौन कौन प्राणिज औषधिका किस रोगमें उपयोग होता है। उसीके आधार पर हम "सुधानिधि ग्रन्थावलीके" पाठकोंको यह प्राणिज औषधिका लघु-संग्रह समर्पित करते हैं।

वैसाख शुक्ल
२००५ वै०

जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हड्डी

(१) नाड़ीव्रण और भगन्दरमें—नकड़बवेकी हड्डी (जिसे संस्कृतमें तरक्षु और अन्तर्वेदमें तेंदुवा अथवा डग्गर कहते हैं) पानीमें घिस कर पिलाना और क्षतस्थानमें लेप करना चाहिये। (२) पीनसरोगमें—डग्गरकी हड्डी पानीमें घिस कर नाकमें छोड़ना चाहिये। (३) जलोदरमें—मनुष्यकी कपालखोपड़ी पानीमें घिस कर पिलावे तो पेटकी सूजन जल्दी उतर जाती है। (४) अस्थिव्रण और गलित कुष्ठपर मनुष्यकी हड्डी बारीक पीस कर कपड़ छान कर रखे। उसीको व्रण पर सूखा ही लगाता जावे, इससे घाव जल्दी भर जाते हैं। (५) पागल सियार और पागल कुत्तेके विषमें—डग्गरके दाढ़की हड्डी घिस कर पिलानेसे विष नष्ट होता हैं अथवा कुत्तेके आगेके पैने नुकीले दांत और उसीकी खोपड़ीकी हड्डी घिस कर पिलानेसे विष नष्ट होता है। (६) सांपके विष पर—गरुड़ पक्षीकी चोंच पानीमें घिस कर पिलानी चाहिये। (७) किसी पशुके गलेमें हड्डीका टुकड़ा अटक गया हो तो डग्गरके नाककी हड्डी पानीमें घिस कर वही पानी बारबार पिलावे (८) भगन्दर-में—त्रिफलाके काढ़ेमें बिल्लीकी हड्डी घिस कर लेप करे (९) नासूरमें जङ्गली बिलारकी हड्डी, कछुवेकी पीठकी हड्डी और डग्गरकी हड्डी घिसकर लगाना चाहये। (१०) लड़कोंके पेटके डब्बेकी बीमारी (जिसे कहीं पलई और पांजरकी बीमारी कहते हैं) कछुवेकी खोपड़ी घिसकर पिलानी चाहिये। (११) भगन्दर और दुष्टव्रणमें बिल्ली और कुत्तेकी हड्डीकी भस्म कर घीमें खरल कर लेप करे। (१२) चूहेके विष पर—बन-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बिलारकी हड्डी घिस कर लगाना चाहिये। (१३) भगन्दर और दुष्टव्रणमें बिलारकी हड्डी, आंवला, हर्र और बहेड़ाके रसमें घिसकर लेप करे।

चूहेकी लेंड़ी

(१) लड़कोंका पेशाब और पायखाना बन्द होगया हो तो चूहोंकी लेंड़ी पानीमें पीस सान कर नाभी पर लेप करे। (२) प्रदरमें चूहोंकी लेंड़ी चावलके धोवनमें पीसकर पिलाना चाहिये। (३) प्रमेहमें चूहेकी तीन चार लेंड़ी दूधके साथ लेना चाहिये। (४) बच्चोंका रेचन कराना हो तो चूहेकी लेंड़ी और रेंड़ीके बीजका चूर्ण नींबूके रसमें खरल कर उसका नाभी और गुदामें लेप करना चाहिये। (५) कान फड़का हो या कानमें खरखरा दाग आ गया हो तो उस जगह पर चूहोंकी लेंड़ी पानीमें पीस कर लगाना चाहिये। (६) यदि चूहेके काटनेसे उसका विष चढा हो तो काटी हुई जगह पर चूहोंकी लेंड़ी पीसकर लगानी चाहिये।

कस्तूरी

कस्तूरिया मृगकी नाभिसे कस्तूरी उत्पन्न होती है। ऐसी कस्तूरिया मृग नैपाल, भूटान, तिब्बत आदि उत्तरके पहाड़ी देशोंमें बहुत होता है। यह बहुत ही सुगन्धित होती है और कठिनाईसे मिलती है; इसलिये महँगी भी बहुत होती है। यह अधिक तो मिलती नहीं; इसलिये बहुतसे लोग मिलावटी कस्तूरी बेचकर भी लोगोंको ठगते हैं। एक प्रकारकी और भी जवादी कस्तूरी होती है, यह जवादी नामक बिल्लीकी जाति-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से उत्पन्न होती है। यह हलकी होती हैं। कस्तूरीका रङ्ग काला कुछ ताम्र (ललाई लिये हुए) रहता है। कस्तूरी गुण-में बहुत गरम होती है। असली कस्तूरी यदि अच्छी तरह सूंघ ली जाय तो नाकसे रक्त निकलने लगे। कस्तूरी खुली नहीं रखी जाती; क्योंकि खुली रहनेसे उसकी सुगन्धित हवामें उड़ जाती है। इससे उसे बहुत बन्दोबस्तके साथ रखना पड़ता है। कस्तूरी नेत्रोंके लिये हितकारी है, चरपरी और कटु है, सुगन्ध वाली और उष्ण है, शुक्रप्रद और भारी है. वृष्य अर्थात वीर्यको बढ़ाने और रोकनेवाली क्षारयुक्त और रसायन है। अर्थात शरीरकी शक्ति कायम रखनेवाली है। इसके सेवनसे किलास कुष्ठ, मुखरोग, कफ, दुर्गन्धि, अलक्ष्मी (दरिद्रता), मलरोग, वायु, तृषा, वान्ति, शोष और विषका नाश होता है। कोई कोई कदाचित् शङ्का करेंगे कि भला और बातें तो कस्तूरीके सेवनसे नष्ट हो जायंगी; परन्तु दरिद्रता तो कोई ऐसी शारीरिक बीमारी नहीं जो औषधि सेवनसे नष्ट हो सके। इसका समाधान यह है कि कस्तूरी सेवनसे. आरोग्यता, शक्ति और उत्साह प्राप्त होगा, इससे मनुष्य उद्योगशील होगा और उद्योगशील होनेसे फिर दरिद्रताकी बाधा कब तक सता सकेगी? कामरूप देशकी उत्पन्न हुई काले रङ्गकी कस्तूरी उत्तम होती है; नैपाल देशकी उत्पन्न हुई कुछ ताम्रवर्णकी कस्तूरी मध्यम और काश्मीर देशकी उत्पन्न हुई कुछ काले तामड़े रङ्गकी कस्तूरी कनिष्ट श्रेणीकी होती है।

जवादी कस्तूरी नेत्रोंके लिये हितकारक, उष्ण, सुखदायक, सुगन्ध, स्निग्ध, वायुनाशक, वान्तिकारक और शुक्रवृद्धिकारक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है। इसके सिवाय खुजली, किटिभ कुष्ठ, पसीना, दुर्गन्ध, विष कण्ठरोग और कुष्ठ नाशक है।

इन कस्तूरियोंके सिवाय एक और लता-कस्तूरी होती है। यह वनस्पतिसे उत्पन्न होती है। इसके वृक्ष और पत्ते एकदम भिण्डीकेसे और फल भी भिण्डीकेसे ही होते हैं। लता कस्तूरी स्वादवर्धक, वृष्य, शीतल, लघु, नेत्रोंके लिये हितकारक, कटु, छेदक, तीक्ष्ण, और बस्तिशोधक है। इसके सिवाय बस्तिरोग, कफ, तृष्णा, मुखरोग, लाल स्राव, वान्ति, वायु, दुर्गन्ध, मद और अलक्ष्मी नाशक है। यह दक्षिण देशोंमें प्रायः होती है। यदि इसीके द्वारा कस्तूरीके गुण लाना आवश्यक हो तो कस्तूरीकी खुराकसे इसकी मात्रा रोग और रोगीकी स्थितिके विचारसे चार गुणासे आठ गुणा तक कर देनी चाहिये।

(१) कान बहने पर थोड़ी कस्तूरी रुईमें लपेट कर कानमें रखे। (२) नहरुआ रोग पर—एक रत्तीसे दो रत्ती तक कस्तूरी घीमें मिलाकर नित्य खावे। इसके उपयोगसे कैसा ही जोरदार नहरू हो परन्तु आराम होता है। (३) सन्निपातमें जो तन्द्रा अर्थात् मूर्छा आती है उसमें कस्तूरी और मिर्च घोड़ेकी लारमें घोटकर शहद मिल कर देवे। (४) ज्वरमें शोष—हो तो पानीमें थोड़ी कस्तूरी मिलाकर वही पानी पीनेको दिया करे। (५) शीताङ्ग—सन्निपातमें कस्तूरी यों ही अथवा शहद मिला कर देवे। (६) कस्तूर्यादि गुटिका—कस्तूरी और शुद्ध कपूर एक एक तोला, लौंग दो तोला, मिर्चे, पीपली, बहेड़ा और कुलींजन आधा आधा तोला और अनारकी छाल ४ तोला, सब दवाइयोंको कत्थेके पानीमें खरल कर मूंगके बराबर गोली बनावे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इन गोलियोंको मुंहमें रखनेसे कफ दूर होता है तथा इनके से नसे श्वासका भी निवारण होता है। (७) नपुंसकता—दूर करनेके लिये पानमें थोड़ी कस्तूरी रखकर शाम सबेरे खाया करे। (८) वीर्य बढ़ाने और पुष्ट करनेके लिये--तीन हिस्से सुवर्ण भस्म और एक हिस्सा कस्तूरी एकत्र कर एकसे लेकर दो रत्ती तक औषधि शहद, चीनी और घीके साथ सेवन किया करे। इसके सेवनसे शरीरमें फुर्ती आती, मन प्रसन्न रहता और कमर दुखनेकी शिकायत दूर होती है। बहुतसे अमीर लोग इसका सेवन नित्य करते हैं। (९) अधिक दिनोंका निद्रानाश-दूर होनेके लिये स्त्री अथवा गायके दूधमें कस्तूरी रगड़कर नेत्रोंमें अञ्जन करे

मकरीका जाला

दीवालों और छतोंके नीचेके भागमें मकरी अपना घर बनाती है। यह घर लम्बे फैले हुए जालोंसे भिन्न होता है। यह दो ढाई इंचके आकारका सफेद चांदनीके आकारका दीवाल या लकड़ी में पोला चिपका रहता है यदि कहीं चोट लगनेसे खून आता हो तो उसी समय उस जगह पर मकरीका घर चिपका देनेसे खून बन्द हो जाता है और घाव भी जल्दी भर जाता है। (२) नहरू पर—मकरीका घर बारीक कर पानके साथ अथवा गुड़के साथ नित्य खानेको दे। शाम तक दिन भर कुछ भी न खावे, शामको खानेको दिया जाय। सो भी नमककी चीज बिलकुल न दी जाय। कमसे कम तीन दिन ऐसा ही करे। (३) आगन्तुक घाव पर मकरीका जाला लगावे। (४) चौपायोंके कुछ लग जानेसे कीड़े पड़ जावें तो मकरीका जाला रोटीके साथ खानेको देवे। चार पांच दिनोंमें कीड़े नष्ट हो जायंगे और घाव भर जायगा। (५)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रसूतिका रोग पर—मकरीका घर बारीक रगड़ कर गुड़के साथ घोट कर खानेको देवे। सात दिन ऐसा ही दे और रोगानुरूप पथ्य करे (६) चातुर्थिक ज्वर पर—मकरीका जाला गुड़में मिलाकर देवे (७) कण्ठसर्परोगपर—मकरीका घर और अगरु चन्दन सामान भाग बारीक कर चिलममें रखकर पीवे अवश्य लाभ होगा।

बाल

(१) अग्निदग्धव्रण अर्थात् आगसे जलने पर होनेवाले घावमें बाल जलाकर अलसीके तेलमें घोटे और घावपर इसीका मलहम लगाया करे। (२) सुखप्रसूति अर्थात् बच्चा होते समय किसी प्रकारकी तकलीफ न होकर सुखपूर्वक बच्चा होनेके लिये स्त्रीकी जननेन्द्रियके पास बाल जलाकर धुनी देवे।

मुर्गीकी बीट

(१) पके हुए घावको फोड़नेके लिये मुर्गी अथवा कबूतरकी बीटका व्रण पर लेप करे (२) पागल कुत्तेके काटनेसे जो विष चढ़ा हो उसमें काटी हुई जगह पर मुर्गीकी बीटका लेप किया करे (३) यदि संखियाका विष चढ़ा हो तो मुर्गीकी बीट पानी में घोलकर पिलावे। इससे कै होगी और उसीके द्वारा विष भी बाहर आ जायगा।

कचुआ-भूनाग

केंचुओंकी उत्पत्ति बरसातमें होती है। इनका रङ्ग तांबेके समान लाल और लम्बाई प्रायः एक बालिश्त रहती है। वैज्ञानिकोंका कथन है कि केंचुओंके शरीरमें तांबा होता है, इसीसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उनका रङ्ग तामड़ा होता है। केंचुए बड़े उपयोगी होते हैं। पारेका जारण करनेमें इनके सत्वका उपयोग होता है। इनके सत्वका उपयोग जरा (बुढ़ापा) दूर करनेमें होता है। अर्थात् इनके सत्वका सेवन करनेसे बुढ़ापेकी व्याधि नहीं सताती। सोनेआदिकी खानियोंके भेदसे ये चार प्रकारके होते हैं। इनमेंसे सोनेकी खानिके केचुवे दुर्लभ होते हैं। **भूनाग सत्व** निकालनेकी रीति—केचुआ, हल्दी, गुड़, गुग्गुल, लाख, ऊन, मछली, खनी और सोहागा एकत्रकर खरल करे और मुसमें भर अग्नि देवे। इससे तांबेके समान सत निकालेगा। यह सत्व शीत है और सम्पूर्ण कुष्ट, व्रण तथा स्थावर और जङ्गम विषोंका नाश करता है। पारेमें भूनागसत्वका योग करनेसे पारा अग्निमें स्थायी होता है। इसके सत्वकी रविवारको अंगूठी बनाकर उसे पानीमें घिंघोलकर वही पानी पीनेको देवे, इससे तत्काल विषका नाश होगा। यदि पैदा होते समय पेटमें बच्चा टेढ़ा पड़ गया हो, अथवा जल्दी प्रसव न होनेसे स्त्री पीड़ित हो रही हो तो वही अंगूठी पानीमें घिंघोलकर स्त्रीको पीनेको देवे। अंगूठीका पानी पीनेको देनेके पहले यदि यह मंत्र पढ़ कर पानी अभिमन्त्रितकर दिया जाय तो और भी अच्छा। **मन्त्र**—रामवस्सोमसेनानी मुद्रितेति तथाक्षरं। हिमालयोत्तरे पार्श्वे स्वकर्णश्च मरुद्रुम। तत्र शूलं समुत्पन्नं तत्रैव विलयं गतः, इस अभिमन्त्रित जलके पिलानेसे जबरदस्त शूल, त्रिदोषकी पीड़ा, भूतबाधा, ग्रहबाधा आदिका नाश होता है और शीघ्र ही स्त्री प्रसूता होती है। इससे व्रण धोनेसे वह जल्दी भर जाता है और नेत्ररोग होनेसे यदि इसीसे आँखें धोयी जाय और आँखोंमें भी वही पानी डाला जाय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तो भालुकीकी सम्मति है कि नेत्रोंका विकार दूर होगा। यदि तेलमें यही अंगूठी डालकर तेल पकाया जाय और शूल अथवा दर्दकी जगहपर उसी तेलकी मालिश की जाय तो उसी समय पीड़ा दूर होगी। (१) नहरूरोगमें केंचुवे सुखाकर रखे और नित्य एक रत्ती गुड़के साथ गोली बनाकर खाया करे। तीन दिनों तक ऐसा हो करे और अलोन खावे तो शरीरका नहरू जल जावेगा (२) सांपके विषमें केंचुआ और कालीमिर्च पानीमें पीसकर पिलावे तो बहुत जल्दी विष उतर जावेगा। (३) नपुंसकता दूर करनेके लिये दो सेर केंचुआ लाकर उन्हें मट्ठेमें धोवे और फिर सुखाकर अधो नलिकायन्त्रसे उनका अर्क निकाले। यह अर्क पानीमें एक बूंद लगाकर खानेसे पुरुषत्व आता है। कमसे कम तीन दिनों तक इसका उपयोग करे। (४) नपुंसकताके लिये तिला बनानेमें भी इसका उपयोग होता है। केंचुवे और बीरबहूटी पीसकर तेलमें पकावे और उसे लिङ्गेन्द्रिय पर लगाया करे पुरुषत्व आवेगा।

काकजंघाकीट

काकजङ्घा अर्थात् मसी नामकी जो वनस्पति होती है उसकी गांठके भीतर एक कीड़ा रहता है, वह कीड़ा जिस लड़केको सूखा हुआ हो उसे खिलानेसे सूखा रोग जाता रहता है।

गदहेकी लीद

(१) शरीर पर सफेद चूहा गिरनेसे कभी कभी एक गांठ निकल आती है। उसे शस्त्र प्रयोगकर निकलवा डाले और उस घावपर गदहेकी लीद बांधे। आठ दिनोंमें आराम होगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(२) अपरस रोगमें गदहेकी लीदका अर्क पाताल यन्त्रसे खींचकर अपरसकी जगह पर लगाया करे। (३) कांच, मिट्टी और गेरूके विषमें गदहेकी लीदका पानी पिलावे। (४) मन्थरज्वरमें गदहेकी लीद पानीमें घोलकर उसीका पानी पीने को देवे।

गदहेके दांत

यदि देवीसे आँखोंमें फूली पड़ गयी हो तो गदहेका दांत घिसकर अञ्जन किया करे, अवश्य ही फूली कट जावेगी।

गोरोचन

गाय अथवा बैलके पित्ताशयमें एक प्रकारकी कंकड़ीसी डली उत्पन्न होती है उसे ही गोरोचन कहते हैं। यह डली जायफलके बराबर होती है, इसपर तहपर तह जमती जाती है। गोरोचन बहुत ठण्डा, रुचिकारक, मङ्गलदायक, वशीकरण कान्ति कारक, वृष्य और कटु है। इससे पिशाचबाधा, ग्रहपीड़ा, विषदोष, कुष्ठ, कृमि, अलक्ष्मी, उन्माद, गर्भस्राव, क्षत, रक्तविकार और नेत्ररोगोंका नाश होता है। (१) बालकोंके उड़नारोग तथा पाँजर चलने (पलई) आदि रोगोंमें गोरोचन और हल्दी पानके रसमें देवे। (२) मन्थर ज्वरमें रोगीको दूसरे ही दिन दिनमें केवल एक बार भेंसके दो तोले दूधमें उड़द बराबर गोरोचन मिलाकर पिलावे। इससे मथुराका असर पेट अथवा आमाशयमें प्रविष्ट नहीं हो सकता और बाहर निकल जाता है। यदि किसी बालकको देवी निकलने वाली हो और यह इच्छा हो कि देवी जोरसे न निकल कर थोड़ेमें ही उनका दोष शान्त हो जाय तो गायके दूधमें गोरोचन घिसकर पिला

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तरहके उदर रोगमें अथवा बालकोंके सब प्रकारके पेटके विकारमें काली तुलसीकी पत्तीका रस और भृंगराजका रस एक तोला लेकर उसमें दो बीरबहूटी रगड़कर उसमें आधी रत्ती गोरोचन और थोड़ा शहद मिलाकर चटावे। बच्चोंको एक बारमें आधी बीरबहूटी देवे। (३) बवासीरमें बीरबहूटी और दुधिया खैरकी राख शहदमें घोटकर मस्सोंपर लेप करे। (५) अर्धाङ्ग वायु, पक्षाघात अर्दित तथा अन्य वायुपर बीरबहूटी पानके साथ अथवा पानके रसके साथ देवे। (६) उदर शूलपर जायफल और बीरबहूटीका चूर्ण एक रत्ती देवे। सूजनपर बीरबहूटी मोममें पकाकर उसीको सूजनपर लेप करे। (८) ढीले स्तन कठिन होने और उठ आनेके लिये बीरबहूटी दूधमें घोटकर लेप करे।

मोर पंख

(१) हिचकी और वान्तिपर—मोरपंखोंकी राख और पीपली शहदके साथ देवे। (२) सर्पदंशपर मोरपङ्ख तम्बाकूके साथ चिलममें रखकर पीवे विष उतर जायगा। (३) मत्स्य विषपर—मछली खानेसे जो विष चढ़ गया हो तो मोरपङ्खीकी धूनी देवे अथवा चिलममें रखकर पीवे। (४) विष बाधा दूर करनेके लिये—जैसे केंचुओंसे तांबा बनता है, उसी तरह मोर पङ्खसे भी ताम्र सत्व निकलता है, उसीकी अंगूठी बनाकर उसे पानीमें डुबाकर देवे, इससे सब तरहकी विष बाधा दूर होगी।

दूध

दूधके समान पौष्टिक, शक्ति वर्धक और आयुष्यको बढ़ाने-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ाला दूसरा पदार्थ संसारमें नहीं है। दूधोंमें भी सबसे श्रेष्ट गायका दूध है। क्योंकि गायके दूध में किसी प्रकारका अवगुण नहीं है। इससे बालकोंसे लेकर बूढ़ों तक सबको यह बहुत ही हितकारी है। पुराने समयमें दूध और दूधसे बननेवाले पदार्थों की अच्छी विपुलता थी, इससे उस समयके लोग शक्तिवान, निरोगी और शूरवीर होते थे। इस समय दूध दुहानकी बिलकुल कमी होती जा रही है। एक तो गोचर भूमिकी कमी और चारे पानीकी असुविधासे लोग पशु बहूत कम पालते हैं। और दूसरे गोमांस भक्षकोंका छुरा बराबर गायकी गदन पर पड़ रहा है। इससे गौवंशकी वृद्धि नहीं होती और लोगोंको भर पेट दूध न मिलने से वे कमज़ोर और हीनवीर्य होते जा रहे हैं, जिससे उनमें रोगोंका प्रादुर्भाव भी विशेष रूपसे हो रहा है। यही नहीं पशुओंकी कमी होती रहनेसे खेतोंके लिये खाद भी यथेच्छ और यथेष्ट नहीं तैयार होता जिससे अनाजकी पैदाइश भी कम होने लग गयी है। साथ ही जो अनाज उत्पन्न होता है, वह भी पहलेकी अपेक्षा हीनवीर्य होता है और इससे लोगोंकी शक्ति बड़ानेका मार्ग अवरुद्ध होता जाता है। इसलिये सबको गोवंशकी रक्षाके लिये मन, बच, कर्मसे प्रयत्न करना चाहिये। गायके दूध, घी, दही, मही आदिके उपयोग और प्रयोगका वर्णन गोरसादि औषधि नामक पुस्तकमें हो गया है। यहां अन्य दूधके विषयमें कुछ लिखते हैं।

भसका दूध—मधुर, पाककालमें शीतल, पौष्टिक, स्निग्ध, बलदायक, भारी, वृष्य, शुक्र, निद्रा, कफ, आलस और रुचि उत्पन्न करने वाला है। पित्त, दाह, श्रम और जठराग्निको नष्ट

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करनेवाला तथा मन्दाग्निवालेको अपथ्य है। जिनकी पाचक शक्ति अच्छी है अर्थात् जिनका अग्नि तीव्र है वे लोग यदि इसे गरम कर पीवें तो बल, पुष्टि और सब धातुओंकी वृद्धि होगी।

बकरीका दूध—कषैला, मधुर, ग्राहक और लघु है, शीत-ज्वर, क्षय, खांसी रक्तपित्त, सर्वव्याधि और अतिसारको नष्ट करता है।

भेड़का दूध—मधुर, स्निग्ध; बाल बढ़ाने और उनकी रौनक चमकानेवाला, पुष्टिदायक, कफ और मेद बढ़ानेवाला है।

हाथिनीका दूध—मधुर, अग्नि मन्द करने वाला, शीतल, वृष्य, चाक्षुष्य (नेत्रोंके लिये हितकारी), वीर्यवर्धक, मेदवर्धक, स्निग्ध, कषैला, बलकारक, कफ बढ़ाने वाला, तृप्ति करनेवाला और पित्त नाशक है।

घोड़ीका दूध—खारा, अग्नि दीपक, रुखा, उष्ण, कान्ति-कारक, देहको स्थिरता देनेवाला, लघु, बलकारक, खट्टा, सारक और वृष्य है। इससे सन्धिवायु, त्रिदोष, उदर, वायु, कुष्ट और दमा नष्ट होता है।

गदहीका दूध—मधुर, बलकारक, रूक्ष, खट्टा, हीन, बुद्धि को मन्द करने वाला, पथ्य, रुचिप्रद और खारा होता है। साथ ही कफ, वायु, बाल रोग, कास, श्वास नष्ट करने वाला है।

ऊंटनीका दूध—मधुर तीखा, रूखा, शोधक, कुछ खारा, दीपन, भेदक, सारक, तीक्ष्ण और उष्ण है और सूजन, कुष्ठ, कफ; आनाह वायु, प्रमेह, नलाश्रित वायु, कृमि, गुल्म, खांसी,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अर्श, उदर और शूलको नष्ट करता है। इसे दुहकर तुरन्त काममें लाना चाहिये; क्योंकि अधिक देर रखा रहनेसे इसमें कीड़े पड़ जाते हैं।

स्त्रीका दुग्ध—मधुर, शीतल, लघु, नेत्रोंके लिये हितकारी, कषैला, पथ्यकर, दीपन, पाचक, धातुवर्धक, रुचिकारक, जीवनदाता और स्नेहन है। इसका उपयोग रक्त पित्तपर नास लेने और नेत्र शूल पर आंखोंमें डालनेके लिये हितकारी है।

(१) उदर रोगपर ऊंटनीका दूध पिलावे। (२) कफ, खांसी, श्वास, अशक्तता और बाल रोग गधीका दूध पिलावे। (३) वीर्यश्राव, धातुक्षीणता आदिपर दूध गरमकर थोड़ी मिश्री डालकर पिया करे। (४) छोटे लड़कोंको जो मुंहका होता है उसमें कुतियाका दूध स्त्रीके दूधमें मिलाकर पिलावे। बालकोंके तालु कण्टकमें इसी तरह उपयोग करे।

दही

गायके दहीके सम्बन्धमें गोरसादि पुस्तकमें लिखा जा चुका है, यहां अन्य पशुओंके दहीका वर्णन देते हैं। भैंसका दही रक्त पित्त नाशक, वृष्य, स्निग्ध, मधुर, शोधन, कफकारक गुरु, अभिष्यन्दि, बलकारक, शुक्रकारक और पित्त, वात तथा श्रम नाशक है।

बकरीका दही—दीपन, पाचन, लघु, रुचिकारक, उष्ण और ग्राहक है। नेत्र रोग, क्षय, अर्श, कृशता, त्रिदोष, श्वास, खांसी और वायुको नष्ट करता है।

हथिनीका दही—कषैला, कान्तिकारक, रुचिकारक, पाक कालमें तीखा, लघु, उष्ण, बलकारक और वीर्यवर्धक है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और परिणामशूल, कफ और वायुको नष्ट करनेवाला है।

घोड़ीका दही—मधुर, कषैला, किंचित वातकारक, रुचिकारक, नेत्रोंके लिये हितकारी और दीपन है तथा कफ, मूर्छा, नेत्र रोग, कुष्ट, बवासीर और उदरकृमिको नष्ट करनेवाला है।

गदहीका दही—रूखा, उष्ण, दीपन, पाचक, मधुर, खट्टा है, रुचिकारक तथा वायु नाशक है।

ऊटनीका दही—तीखा, खट्टा, भेदक, रस बनते समय मधुर और खट्टा है। वातार्श, कृमि, कुष्ठ और शूल, तथा उदरको नष्ट करनेवाला है।

स्त्रीका दही—बलकारक, तर्पण, भारी, पाककालमें मधुर, खट्टा, नेत्रों के लिये हितकारक, कषैला, पाककालमें लघु, रुखा, उष्ण, कफनाशक है और परिमाण शूल, मलस्तम्भ त्रिदोष तथा मूत्रदोषको नष्ट करता है।

भैंसका गोबर

[१] नाखूना होने पर भैंसका ताजा गोबर गरम कर बांधना चाहिये [२] कहीं मोच आयी हो तो डांगरका गोबर लगा कर सेंके अथवा मोचकी जगहकी जमीनमें गाड़कर ऊपरसे भैंसके कंडे सुलगाओ, उसकी गर्मीसे नीचे पसीना आवेगा और गर्मी पहुँचेगी; जिससे मोच ठीक हो जायगी। [३] मधुरा ज्वर में भैंसका गोबर पानीमें घोलकर बगलतक पावोंको मलकर धोवे। [४] सुजाककी कड़क पर भैंसका गोबर पानीमें छानकर उसमें शक्कर डालकर पीवे। [५] खाज या सूखी खुजलीमें भैंसका गोबर शरीर पर खूब मलकर स्नान किया करे। गायके गोबरके विषयमें गोरसादि औषधिमें लिखा जा चुका है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मक्खन

गायके मक्खनके विषयमें गोरसादि औषधिमें बहुत कुछ लिखा जा चुका है; उसके सिवाय अन्य पशुओंके मक्खनके विषयमें यहाँ लिखा जाता है।

भैंसका मक्खन—कसैला, वादी, भारी, कफकारक, मेद-वर्धक, नेत्रोंको हितकारी, धातुवर्धक, वृष्य, मधुर, शीतल, बल-कारक, दाहहारक, ग्राही और श्रम तथा पित्तका नाशक है। भैंसका ताजा मक्खन धातुवर्धक, बालक और बूढ़ोंको हित-कारक तथा बलप्रद है।

बकरीका मक्खन—मधुर, कषैला, हलका, नेत्रोंको हित-कारक, दीपन, बलकारक, हितकारी तथा क्षय, खांसी, गुल्म, प्रमेह, शूल, नेत्ररोग, ज्वर, पाण्डुरोग और श्वेतकुष्ट नाशक है।

[१] कानमें जलन और तड़फन होती हो तो थोड़ासा मक्खन आग पर गरमकर कानमें छोड़े। [२] खूनी बवासीरमें मक्खन और तिल खावे। अथवा मक्खन, नागकेसर और मिश्री खावे। [३] रक्तातिसारमें मक्खन, शहद और मिश्री खावे। [४] क्षयरोगमें गाय या बकरीका मक्खन मिश्रीके साथ खाया करे। [५] रक्तपित्तमें प्रवाल, मिश्री और मक्खन खावे। प्रमेहमें गुर्चका सत्त, प्रवाल और मक्खन मिश्री खावे। नपुंसकता और इन्द्रिय दुर्बलता पर भैंसके मक्खनमें काली मुसली कपड़-छान कर फटकर इन्द्रियके ऊपर लेप लगावे।

घी

सब पशुओंके घीमें गायका घी श्रेष्ठ है। औषधमें सदा ताजे घीकी योजना करनी चाहिये। घीके सेवनसे मनुष्यके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शरीरमें धातुकी वृद्धि होती है और ताकत आती तथा दिमाग शान्त रहता है। घीके सेवनसे शरीरकी अशक्तता और गर्मी शान्त होती और रक्त शुद्ध होता है। जिन्हें शारीरिक परिश्रम अधिक करना पड़ता है, उनके लिये घीका सेवन बहुत ही हितकारी है। इस समय दुर्दैवसे घी दूधकी कमी होनेके कारण घीमें चर्बीके समान निषिद्ध पदार्थकी मिलावट होने लगी है। ऐसी मिलावटी घी सेवन करनेसे अनेक विकार होनेकी सम्भावना रहती है। गायके घीके विषयमें गोरसादि औषधिमें लिखा जा चुका है।

बकरीका घी—आँखोंके लिये हितकारी, दीपन, बलवर्धक, वृष्य, पाककालमें तीखा और खांसी, श्वास, क्षय, कफ, बवासीर राजयक्ष्माको नष्ट करनेवाला है।

भेड़का घी—तीखा, उष्ण, कफवायु, योनिदोष, पित्त और शोषको नष्ट करनेवाला है।

भैंसका घी—आनन्दवर्धक, शरीरकी रङ्गत खोलने वाला, हृदयको ताकत पहुँचानेवाला, चेहरेकी कान्ति बढ़ानेवाला, रुचिकारक, कफ बढ़ानेवाला, मीठा, शीतल, मलको रोकनेवाला, बलदायक, धैर्यवर्धक और भारी है। तथा अर्श, संग्रहणी, वायु, रक्तपित्त, भ्रम और पित्तनाशक है।

हथनीका दूध—कड़ू, हलका, कषैला, अग्निदीपक तथा कुष्ठ और कृमि नाशक है। इसके सिवाय मल और मूत्रका स्तम्भक, कफ नाशक, पित्तहारक और विष तथा रक्तविकार प्रकाशक।

❀ अब तो विलायत से वनस्पति तैलोंका घी बन कर आता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नाशक है।

घोड़ीका घी—किञ्चित मधुर, अग्निदीपक, कषैला, तीखा, मलमूत्र रोधक, किञ्चित वायुकारक, उष्ण, पाककालमें लघु, भारी और कफ तथा मूर्छा नाशक है।

ऊंटनीका घी—अग्निदीपक, खारा, पाककालमें तीखा और विष, अर्श, कृमि, सूजन, वायु, कफ क्रोष्टुशीर्ष, उदरौ, कुष्ठ, गुल्म, उन्माद, मोह, मूर्छा, अपस्मार, बड़बड़को नष्ट करनेवाला है।

गदहीका घी—बलकारक, बुद्धिप्रद, वमनकारक, अग्निदीपक उष्णवीर्य, पाककालमें लघु, कषैला, ग्लानिकारक और मूत्रदोष तथा कफनाशक है।

स्त्रीघृत—रुचिप्रद, नेत्रोंको हितकारी, पाककालमें लघु, अग्निदीपक और बायु, पित्त, कफ और विष नाशक है।

[१] आगसे जले हुए घाव, हाथ पांवकी जलन, शिर घूमना। तथा आंखोंकी जलन और जलजलाहट हो तो गायका घी लगावे [२] गर्भिणीके रक्तश्राव, दाहयुक्त वातरक्त, सन्निपातज विसर्प और दाह रोगपर गायका घी सौबार धोकर अथवा हजार बार धोकर मले। [३] ज्वरमें दाह हो तो जहाँ तक मिल सके पुराना नहीं तो नया घी सौ अथवा हजार बार धोकर मले, दाह शान्त होगा। [४] व्रण और नाड़ी व्रण (नासूर) पर पुराने घीका लेप करे। [५] आंखें करकराती हों तो स्त्रीका घी लगावे [६] आंखोंकी लाली, मांडा फूली, नाखूना आदिपर गाय अथवा बकरीका बहुत पुराना घी लगाया करे [७] नपुंसकता और इन्द्रिय दुर्बलता पर भैंसका घी काली मुसलीके चूर्णके साथ लगावे। [८] गर्मीके चट्टोपर-भैंसके घीमें मुर्दासंग, संगजिरा, इलायची, सफेद

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कत्था, सड़ीसुपारी पीस कपड़छानकर फेंटकर लगावे।

बाघकी चर्बी

[१] हड्डीतक पहुँचे हुए घावपर दो तीन दिनों तक बाघकी चर्बी लगावे। [२] देवीका जोर अधिक न होने देनेके लिये बाघका पैना दांत पानीमें घिसकर नित्य दिया करे। [३] सन्धि वायुपर रातको सोते समय दर्दके स्थानमें अथवा यदि हो सके तो सारे शरीरमें बाघकी चर्बी मला करे।

मूत्र

औषधिके काममें मूत्रोंमें गौमूत्र मुख्य हैं। तथापि अन्य पशुओंके मूत्र भी काममें आते हैं। यदि किसी पशुका मूत्र न मिले तो गायका मूत्र उसके बदले व्यवहारमें ला सकते हैं। गौमूत्रमें रेचक गुण अच्छा और विशेष रूपसे है। बहुतसे तेल और घी सिद्ध करनेमें गौमूत्रका उपयोग किया जाता है। जहाँ नास लेनेमें मूत्रका उपयोग हो वहाँ ऊंटका मूत्र लेना चाहिये; जहाँ पीनेके उपयोगमें मूत्रका काम पड़े वहाँ गौमूत्र लेवे। गदहे, घोड़े, बकरे और भैंसका मूत्र तेलमें औटाकर लेप करनेसे दाद, खुजली और विसर्प नष्ट होता है। गौमूत्रका उपयोग गोरसादि औषधिमें लिखा है। अन्य मूत्रोंके सम्बन्धमें यहां कुछ लिखते हैं।

महिषी मूत्र—कषैला, कड़ू, खारा, पित्तकारक, तीखा और शूल, बवासीर, उदर, कुष्ठ, मेह, विशूचिका, पेटका फूलना, पाण्डुरोग, गुल्म और खाजको नष्ट करता है।

अजामूत्र—बकरीका पेशाबतीखा, लघु, उष्ण, कटु, स्वादु कषैला, तीक्ष्ण, पथ्याकारक, वायुकारक तथा दमा, खांसी,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सूजन, कमल, उदर, पाण्डु, कफ, गुल्म, प्लीहा, नाड़ीव्रण, ज्वर, विष और कर्णशूल नष्ट करता है।

हथिनीका मूत्र—खारा, कटु, भेदक, पित्तकारक, कषैला, तीखा, सारक, तीक्ष्ण, विदारण है और शूल, हिचकी, दमा, वायु, किलासकुष्ठ, कण्डू, मण्डलकुष्ठ, कृमि, अर्श, विष, गुल्म, और कफको नाश करता है।

घोड़ेका मूत्र—उष्णवीर्य, खारा, तीखा, रूखा, तीक्ष्ण, पित्तकारक, कुष्ठ, उन्माद, कृमि, मोह, कफ, वायु, दाद, शूल, विष और किलासकुष्ठ नष्ट करता है।

गधेका मूत्र—अग्निदीपक, कटु, खारा, तीखा, और तीक्ष्ण है; तथा कफ, वायु, संग्रहणी, कृमि, भूतबाधा, कम्प, उन्माद, और चित्त भ्रमको नाश करता है।

ऊंटका पेशाब—तीखा, कडू, उष्ण, दीपन, पित्तकोपन, खारा, तीक्ष्ण, बलकारक और कुष्ठ, शोफ, विष, अर्श, उदरकृमि, उन्माद, वायुरोग और मनोव्याधि नाशक है।

नरमूत्र—रेचक, खारा, उष्ण, रसायन, कडू, और रूखा है तथा विष, आम, कृमि, रक्तदोष, व्रण, भूतबाधा, चमड़ेका दोष, वायु, मोह, कफ और पित्तको नाश करता है।

(१) कफक्षय और पाण्डुरोगपर पुराने लोहकीटको बबूल अथवा बहेड़ेकी लकड़ीके कोयलेमें तपाकर गौमूत्रमें १०० बार बुझावे अर्थात् डुबावे और फिर खरलकर उसमेंसे एक रत्ती चूर्ण शहद पीपलके साथ लेवे। इस चूर्ण को "मण्डूर" कहते हैं। (२) अपस्मारपर खटमलके खूनमें कपड़ा भिगाकर सुखावे और फिर उसे गधेके पेशाबमें भिगाकर तीन दिनों तक नास देवे मृगीरोग अच्छा होगा। (३) विषैले सांपके काटने पर मनुष्य

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

का पेशाब पिलावे कय होकर विष उतर जावेगा।

मही

गौके मट्ठेके विषयमें गोरसादि औषधिमें लिखा जा चुका है। अन्य पशुओंके मट्ठेके विषयमें यहां लिखते हैं।

भैंसका मट्ठा—कफकारक, गाढ़ा, शोफकारक, भारी और गुल्म, अतिसार, प्लीहा, अर्श, संग्रहणी, पाण्डुरोग, विषमज्वर और मूत्र रोगको नष्ट करता है।

बकरीका मट्ठा लघु, स्निग्ध और दाह, गुल्म, अर्श, त्रिदोष, पूजन, संग्रहणी, और पाण्डुरोग, नाशक है।

(१) संग्रहणीमें गायके मट्ठेमे सोंठ और पीपलीका चूर्ण मिलाकर देवे।

शहद

साधारणमधु—शीतल, लघु, मीठा, रूखा, स्वरवर्धक, ग्राहक, नेत्रोंको हितकारी, अग्निदीपक, व्रणशोधक, नाड़ीकी शुद्धि करनेवाला, सूक्ष्मरोपण, मृदु, वर्णकारक, मेधाकर, विसद, वृष्य, रुचिकारक, आनन्दकारक, कषैला, अल्पवातकर और कुष्ठ, अर्श खांसी, पित्त, रक्तदोष, कफ, मेह, कृमि, मद, ग्लानि, तृष्णा, वान्ति, अतिसार, दाह, क्षतक्षय, मेद, क्षय, हिचकी, त्रिदोष, आध्मानवायु, विष और मलबन्ध नाशक है। सब प्रकारका शहद व्रणरोपक, शोधक और अस्थियोंका सन्धान करनेवाला है। शहद यदि गरम करके खाया जाय अथवा उष्णताके दिनोंमें उष्ण पदार्थोंके साथ खाया जाय तो विषके समान सन्तापकारक होता है। औषधिमें पुराना शहद डालना चाहिये। ज्यों ज्यों शहद पुराना होता जाता है, त्यों त्यों गुण-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कारी होता है। घी और शहद कभी समान भाग नहीं लेना चाहिये; क्योंकि उसका गुण विषके समान होता है। उत्तम शहद वह है जो रङ्गमें गायके घीके समान तथा रुचिकारक, सुगन्धि युक्त हो।

(१) कान बहता हो तो महुवा के वृक्ष का मधु (जो पेड़के खोखलोंमें मक्खी छत्ता लगाती है) कानमें डालें। (२) कानमें मक्खी, बगही आदि गयी हो तो शहद कानमें डाले। (३) बिच्छूके काटने पर दंश स्थान पर शहद लगावे। (४) मेदोरोगपर प्रातः काल चार तोले गरम पानीमें दो तोले शहद डाल कर पीवे। (५) मुख रोग पर पानीमें शहद मिलाकर कुल्ले करे अथवा केवल शहदके ही कुल्ले करे। इससे मुंहके घाव, चट्टे और दाह, तृषा दूर होकर मुंह साफ होता है। (६) अग्निदग्ध व्रणपर वृक्षके खोंखलेमें लगे हुए मोमका शहद पंखसे लगावे। (७) कान में बगही गयी हो तो शहद और तेल कानमें डाले। (८) रक्तपित्त पर शहद और मिश्री बकरीके दूधमें डालकर पीवे। (९) तृष्णा रोग पर सेर भर ठण्डे पानीमें मिश्री और शहद मिलाकर पिलावे। (१०) तृषा और दाह पर सेर भर ठण्ढे पानीमें शहद मिलाकर पिलावे, वमन होजाने पर—दाह तृषा शान्त होगी। (११) शेरके काटे हुए विषपर पानी में शहद मिलाकर पिलाया करे कुचलाके विष पर शहद घी और मिश्री देवे।

मोम

मधुमक्खीके छत्तेका मोम पिच्छिल, स्वादु, तीखा, स्निग्ध, मृदु, अस्थिसन्धानकारक, व्रणके लिये हितकारक और वायु, कुष्ठ, विसर्प, रक्तदोष, वातरक्त, भूतदोष और लेपोंसे फटे हुए

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चमड़ेका विकार नष्ट करता है। (१) नखके बिगाड़ पर गरम की हुई मोमकी लुगदी नखपर जमाकर अंगुली बांध दे, नित्य ऐसा ही करता रहे चार पांच दिनोंमें लाभ दिखाई पड़ेगा। (२) पावों का बेवाई पर गरमकर मोम लगावे और दरारोंमें भी भर दे अवश्य लाभ होगा। (३) घाव पर घीमें मोम गरम कर मल्हम लगावे। (४) स्त्रियोंके रक्तप्रदर पर मोममें ईंटका चूर्ण खरल कर देवे।

समुद्रफेन

समुद्र फेन एक प्रकारकी मछलीके पेटकी हड्डियोंका पिञ्जर है। यह सफेद रङ्गका होता है और स्पञ्जके समान इसमें बारीक बारीक असंख्य छिद्र होते हैं। यह बसरा प्रान्तकी ओरसे भारतमें आता है। समुद्र फेन रुचिकारक, लेखन, कषैला, लघु, नेत्रोंके लिये हितकारक, शीतल, नेत्रोंकी फूली काटनेवाला, सारक और विषघ्न है तथा कर्णशूल, कफ, कण्ठरोग और पित्त-नाशक है। अशुद्ध समुद्र फेन अङ्ग-भङ्ग करता है; इसलिये उसका शोधन करना आवश्यक है।

समुद्रफेन नींबूके रसमें एक पहर तक घोंटे तो शुद्ध हो जायगा। (१) रतौंधा और नेत्रोंके धुंधलेपनपर समुद्रफेन और मिश्री बहुत बारीक रगड़कर सवेरे शाम नेत्रोंमें डाला करे इससे दृष्टिमान्द्य, रतौंधी, नेत्रोंकी लाली, खुजली आदि विकार अच्छे होते हैं। (२) कानमें दर्द और ठनका हो तो समुद्रफेनका कपड़छान चूर्ण कर कानमें डाले और ऊपरसे नींबूका रस निचोड़े। (३) कर्णस्राव, व्रण और कानमें मैल बहुत जमता हो तो समुद्रफेनका चूर्ण कानमें डाले। (४) खुजलीमें समुद्रफेन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पीसकर योंही रगड़े अथवा कड़ू तेलमें मिलाकर रगड़े।

सर्पका कांचली

जिस सांपमें फन होता है उसकी कांचली लाभदायक होती है। सांपकी कांचली पुस्तकोंपर रख दी जाय तो उन्हें कीड़े नहीं चाटते। (१) शरीरपर पित्ती उठती है उसपर सांपकी कांचली जलाकर तिलके तेलमें खरलकर लगावे। (२) शीघ्र प्रसूतिके लिये सांपकी कांचली जलाकर धूनी देवे। (३) बदपर सांपका कांचलीं और अफीमकी टिकिया बनाकर बांधे। अथवा सांपकी कांचलीं बारीक पीसकर गुड़में मिलाकर तीन दिनों तक खानेको देवे। (४) चर्मखीलपर—सांपकी कांचली पानीमें खरल कर लेप करे। (५) चूहोंके विषपर सांपकी कांचलीकी तीन दिनों तक धूनी देवे। (६) विषमज्वरादिपर सांपकी कांचली, सरसों, हींग कड़ूनीमकी पत्ती सबको बारीक कर धूनी देवे। इस धूनीसे राक्षसरोग, डाकिनीरोग आदि ग्रहरोग नष्ट होते और विषम-ज्वर भी नष्ट होता है। (७) बवासीरमें सांपकी कांचली गूगल और मुरेमक्कीकी धूनी देवे।

खरहेका (सशक्त) रक्त

बालकोंके डब्बेके रोगमें अर्थात् पांजर चलनेपर खरहेके खूनमें कपड़ा भिगाकर पांजरोंपर रखे और उसी खूनसे भिगा हुआ कपड़ा दूधमें घोलकर पिलावे।

सांबरशृङ्ग

(१) सूजन, जखम और वायुसे शरीरमें ठनका होता हो तो सांबरका सींग घिसकर लेप करे। (२) शिर दुखता हो तो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दूधमें सांबरका सींग घिसकर लेप करे। (३) रक्तातिसार और आंव पड़ता हो तो सांबरकी सींग घीमें घिसकर पिलावे। (४) बच्चेका तालू बैठ गया हो तो गायके दूधमें सांबरकी सींग घिसकर तालूपर लेप करे और ऊपरसे एरण्डके पत्ते रखकर बांध दे, इसके सिवाय गायमें दूधमें सांबरकी सींग घिसकर पिलावे भी। (५) वायुके शूलपर सांबरशृङ्ग भस्म नित्य दूधके साथ लेना चाहिये। इससे धातुकी वृद्धि होगी और धातु-स्थानकी जलन दूर होगी। (७) खांसी, दमा, ग्रन्थि; अपचा, और अण्डवृद्धिपर एक रत्ती सांबरशृङ्ग भस्म शहदके साथ दिया करे।

सांबरके सींगकी भस्म बनानेकी विधि—सीताफलकी (शरीफा) पत्ती बारीक बांटकर उसका कुछ लम्बा गोला बनावे और उसके मध्यभागमें सांबरशृङ्गको कूटकर उसके टुकड़े भरे फिर जङ्गली कण्डोंका पुट देकर भस्म करे। इसी प्रकार मन्दार-के दूधमें सांबरशृङ्ग रखकर पुट देनेसे भी भस्म होती है।

हरिणशृंग भस्म

(१) हृद्रोग, कटिग्रह, सन्धि शूल और हृदयशूल पर आधा माशा हरिणशृङ्गभस्म गायके घीके साथ देवे। (२) आमशूल और पेटके दर्दपर आधामाशा हरिणशृङ्ग भस्म नींबूके अर्कके साथ देवे।

भस्म करनेकी विधि हरिणशृङ्गको कूटकर टुकड़े करे और शरावसम्पुटमें कर जङ्गली कण्डोंकी आग देकर भस्म कर ले।

हस्तिदन्त

(१) बाल उगनेके लिये—हाथीदांतको मशेरी दारुहल्दी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रस अथवा काढ़ेमें खरल कर भावना देवे और उसको उस स्थान पर लगावे जहां बाल उगाना हो। (२) यदि सूजन फोड़नेका इरादा हो तो हाथी दांत घिसकर सूजनके मुंह पर एक बूंद लगावे। (३) बवासीरमें हाथीदांतकी धूनी घुण्डियोंमें देवे। (४) खाज, दाद आदि चर्मरोगपर चूर्ण जलाकर घीमें खरल करे; उसीका लेप करनेसे दाद, खाज आदि आराम होगा। (५) **दन्तवर्ति** हाथी दांत, सुअरका दांत, ऊंटका दांत बैलका दांत, बकरेका दांत, गधेका दांत, शङ्ख, मोती और समुद्र-फेनका चूर्ण कर पानीमें खरल करे और बत्तीके समान उसकी लम्बी गोली बना रखे। इसे बासी पानीमें घिसकर आंखोंमें अञ्जन करनेसे आंखोंकी फूली बहुत जल्द कट जाती है। फूली काटनेके लिये यह प्रयोग बहुत उत्तम है।

॥ इति शम् ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE